SHODH SAMAGAM
ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

अंर्तरराष्ट्रीय विश्व व्यवस्था के संदर्भ में भारत की विदेश नीति एवं सुरक्षा नीति

प्रियंक चक, पी–एचडी, सैन्य विज्ञान विभाग
शासकीय आदर्श विज्ञान महाविद्यालय, ग्वालियर, मध्यप्रदेश, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Author
प्रियंक चक, पी–एचडी
E-mail : priyankchack@gmail.com

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 24/12/2025
Revised on : 25/02/2026
Accepted on : 06/03/2026
Overall Similarity : 06% on 26/02/2026

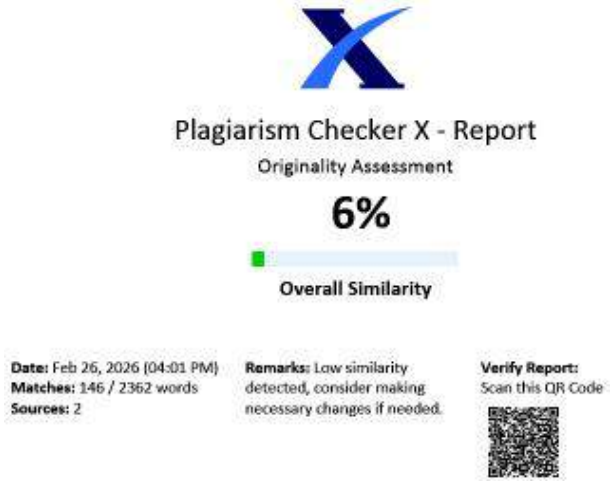

शोध सार

यह शोध पत्र अंर्तराष्ट्रीय विश्व व्यवस्था के संदर्भ में भारत की विदेश नीति और सुरक्षा नीति पर केंद्रित है। इसमें भारत की विदेश नीति की प्राथमिकताओं, रणनीतियों और प्रमुख उद्देश्यों का विश्लेषण किया गया है, विशेष रूप से बदलती वैश्विक परिस्थितियों, क्षेत्रीय चुनौतियों और उभरती हुई नीतियों के संदर्भ में। भारत की सुरक्षा नीति, जो एक बहुआयामी दृष्टिकोण अपनाती है, में न केवल पारंपरिक सुरक्षा, बल्कि असंवैधानिक और गैर पारंपरिक खतरों का भी समावेश है। इस शोध में यह भी बताया गया है कि भारत की विदेश नीति में सार्वभौमिकता, क्षेत्रीय शांति, और साझी समृद्धि की अवधारणा कैसे केंद्रीय रही है, और वैश्विक संकटों, जैसे कि जलवायु परिवर्तन, आतंकवाद, और महामारी के मद्देनजर भारत ने कैसे अपनी भूमिका को पुनर्निर्धारित किया है। साथ ही, भारत के आसियान, ब्रिक्स, और शंघाई सहयोग संगठन जैसे वैश्विक मंचों पर बढ़ते प्रभाव और सैन्य गठबंधन, व द्विपक्षीय संबंधों की प्रमुखता पर भी विचार किया गया है। यह अध्ययन यह समझने का प्रयास करता है कि भारत की विदेश नीति और सुरक्षा नीति किस प्रकार भविष्य में वैश्विक शक्ति संतुलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है और उसे किस प्रकार अपनी प्राथमिकताओं के आधार पर रणनीतियों में बदलाव करने की आवश्यकता है।

मुख्य शब्द

पारंपरिक सुरक्षा, सार्वभौमिकता, क्षेत्रीय शांति, जलवायु परिवर्तन, आतंकवाद.

प्रस्तावना

भारत, एक प्रमुख वैश्विक शक्ति के रूप में, वैश्विक राजनीति और सुरक्षा के क्षेत्र में अपने प्रभाव का विस्तार कर रहा है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से ही भारत ने अपनी विदेश नीति और सुरक्षा नीति को राष्ट्रीय हितों,

क्षेत्रीय सुरक्षा, और वैश्विक शांति के सिद्धांतों पर आधारित किया है। समय के साथ, भारत ने बदलते वैश्विक संदर्भ, शक्ति संतुलन, और अंर्तराष्ट्रीय घटनाओं के अनुरूप अपनी रणनीतियों को पुनः परिभाषित किया है। 21वीं सदी में भारत का अंर्तराष्ट्रीय महत्व और भी बढ़ गया है, खासकर उसकी आर्थिक और सामरिक शक्ति में वृद्धि, क्षेत्रीय अस्थिरता, और वैश्विक संकटों के संदर्भ में। भारत की विदेश नीति का प्रमुख उद्देश्य वैश्विक शांति और स्थिरता बनाए रखना, राष्ट्रीय हितों की रक्षा करना, और समृद्धि की दिशा में प्रभावी कदम उठाना रहा है। गांधीवादी अहिंसा, गुटनिरपेक्ष आंदोलन, और सार्वभौमिकता जैसे सिद्धांतों को अपने विदेशी संबंधों की दिशा देने के बावजूद, भारत ने समय–समय पर अपनी नीति को कठोर सुरक्षा, आर्थिक लाभ और क्षेत्रीय रणनीतिक सहयोग की दिशा में पुनः परिभाषित किया है। भारत की सुरक्षा नीति, जो समग्र सुरक्षा दृष्टिकोण अपनाती है, केवल पारंपरिक सैन्य खतरे तक सीमित नहीं है, बल्कि असंवैधानिक और गैर पारंपरिक खतरों जैसे आतंकवाद, साइबर हमले, जैविक हथियारों और जलवायु परिवर्तन को भी ध्यान में रखती है। इसके अतिरिक्त, भारत की सुरक्षा नीति का एक महत्वपूर्ण पहलू इसके रणनीतिक गठबंधनों और सैन्य क्षमता में वृद्धि है, जो उसे वैश्विक शक्तियों के साथ प्रतिस्पर्धा में मदद करता है। अंर्तराष्ट्रीय विश्व व्यवस्था में परिवर्तन, विशेष रूप से वैश्विक शक्ति संतुलन में बदलाव, भारत के लिए नई चुनौतियाँ और अवसर प्रस्तुत कर रहे हैं। इस बदलते परिप्रेक्ष्य में, भारत को अपनी विदेश नीति और सुरक्षा नीति में नवाचार करने की आवश्यकता है ताकि वह वैश्विक घटनाओं के प्रति प्रभावी प्रतिक्रिया दे सके।

यह भारत की विदेश नीति और सुरक्षा नीति को विस्तार से विश्लेषण करेगा, यह समझने के प्रयास के साथ कि कैसे यह नीतियाँ देश की सुरक्षा, क्षेत्रीय स्थिरता और वैश्विक परिदृश्य में भारत के बढ़ते प्रभाव को सुनिश्चित करती हैं। साथ ही, यह अध्ययन यह भी निर्धारित करेगा कि भविष्य में भारत को अपनी नीतियों में क्या सुधार या बदलाव की आवश्यकता हो सकती है ताकि वह आगामी वैश्विक चुनौतियों का सामना कर सके।

उद्देश्य

इसका मुख्य उद्देश्य भारत की विदेश नीति और सुरक्षा नीति का गहन विश्लेषण करना है, ताकि यह समझा जा सके कि यह नीतियाँ वर्तमान अंर्तराष्ट्रीय विश्व व्यवस्था में भारत की भूमिका को कैसे आकार देती हैं।

अध्ययन का उद्देश्य

- भारत की विदेश नीति के मूल सिद्धांतों और प्राथमिकताओं का विश्लेषण।
- वैश्विक शक्ति संतुलन और भारत की सुरक्षा नीति।
- भारत के रणनीतिक गठबंधन और सैन्य क्षमता का मूल्यांकन।
- आर्थिक, पर्यावरणीय और सामाजिक दृष्टिकोण से भारत की विदेश और सुरक्षा नीति।

इस शोध का उद्देश्य अंततः यह समझना है कि भारत की विदेश नीति और सुरक्षा नीति कैसे बदलते वैश्विक परिप्रेक्ष्य में देश की स्थिति को सुरक्षित और सशन बनाती हैं, और किस प्रकार भारत वैश्विक मंच पर अपनी भूमिका को और सुदृढ़ कर सकता है।

महत्त्व

भारत की विदेश नीति और सुरक्षा नीति का वैश्विक दृष्टिकोण में अत्यधिक महत्त्व है, क्योंकि यह न केवल भारत के राष्ट्रीय हितों की रक्षा करती है, बल्कि उसकी वैश्विक स्थिति को भी प्रभावित करती है। 21वीं सदी में भारत, एक उभरती हुई शनि, वैश्विक मामलों में अपने अधिकार क्षेत्र और प्रभाव को बढ़ा रहा है। इस संदर्भ में, भारत की विदेश नीति और सुरक्षा नीति के महत्त्व को समझना आवश्यक है, क्योंकि यह देश के लिए अंतरराष्ट्रीय स्थिरता, सुरक्षा और समृद्धि की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान देती है।

समस्या

भारत की विदेश नीति और सुरक्षा नीति, हालांकि प्रभावी हैं, फिर भी विभिन्न वैश्विक और क्षेत्रीय परिप्रेक्ष्य में कई समस्याओं और चुनौतियों का सामना करती हैं। बदलती अंर्तरराष्ट्रीय स्थिति, आंतरिक सुरक्षा के मुद्दे, और वैश्विक शक्ति संतुलन में होने वाले परिवर्तनों के कारण भारत को अपनी नीतियों को निरंतर परिष्कृत और अनुकूलित करने की आवश्यकता है। इस संदर्भ में, निम्नलिखित प्रमुख समस्याएँ उभरती हैं:

- **बदलते वैश्विक शक्ति संतुलन के साथ समन्वय की समस्या:** वैश्विक शक्ति संतुलन में बदलाव, खासकर चीन और अमेरिका के बीच बढ़ते तनाव, भारत की विदेश नीति के लिए एक महत्वपूर्ण चुनौती प्रस्तुत करता है। चीन के साथ सीमा विवाद और अमेरिका के साथ रणनीतिक साझेदारी की जरूरत, भारत को एक संतुलित नीति अपनाने के लिए मजबूर करती है। यह संतुलन बनाए रखना और साथ ही अपने राष्ट्रीय हितों की रक्षा करना कठिन हो सकता है।
- **आंतरिक सुरक्षा की समस्याएँ:** भारत की सुरक्षा नीति का एक बड़ा हिस्सा आंतरिक सुरक्षा से संबंधित है, विशेष रूप से आतंकवाद, सीमा पार से होने वाले हमले और सामरिक खतरे। पाकिस्तान और चीन से उत्पन्न होने वाले सैन्य खतरे, और आंतरिक नक्सलवाद जैसी समस्याएँ, भारत के लिए चुनौतीपूर्ण हैं। इसके अलावा, साइबर सुरक्षा, जैविक और रासायनिक हथियारों के खतरे भी भारत की सुरक्षा नीति में महत्त्वपूर्ण मुद्दे हैं।
- **भ्रष्टाचार और प्रशासनिक कमजोरियाँ:** विदेश नीति और सुरक्षा नीति के प्रभावी कार्यान्वयन में भ्रष्टाचार और प्रशासनिक कमजोरी भी एक बड़ी समस्या है। सरकारी एजेंसियों के बीच समन्वय की कमी, नीति निर्धारण में अस्पष्टता, और संसाधनों की कमी भारत की नीति को प्रभावी रूप से लागू करने में बाधा डालती हैं। यह न केवल भारत के रामट्रीय हितों के लिए, बल्कि अंतरराष्ट्रीय समुदाय के साथ उसके संबंधों के लिए भी नुकसानदेह हो सकता है।
- **संप्रभुता और क्षेत्रीय विवाद:** भारत की क्षेत्रीय विवादों से संबंधित नीति, विशेष रूप से पाकिस्तान और चीन के साथ, एक लगातार जटिल समस्या बनी हुई है। पाकिस्तान से कश्मीर मुद्दा, और चीन से सीमा विवाद, भारत की विदेश नीति और सुरक्षा नीति को प्रभावित करते हैं। इन विवादों के समाधान के लिए भारतीय नीति को ढूंढना एक कठिन कार्य है, जो हमेशा प्रभावी नहीं हो पाता है।
- **विकसित और विकासशील देशों के बीच संतुलन बनाए रखना:** भारत की विदेश नीति में विकसित देशों और विकासशील देशों के साथ संबंधों को संतुलित करना एक अन्य चुनौती है। जबकि भारत को विकसित देशों से व्यापार और रणनीतिक साझेदारी की आवश्यकता है, वहीं विकासशील देशों के साथ उसके ऐतिहासिक और विकासात्मक संबंध भी अत्यधिक महत्त्वपूर्ण हैं। इस संतुलन को बनाए रखना भारत की नीति के लिए कठिन हो सकता है।
- **वैश्विक नेतृत्व में भारत की भूमिका:** भारत के लिए एक अन्य समस्या यह है कि वह वैश्विक नेतृत्व में अपनी भूमिका को कैसे अधिक प्रभावी बना सकता है। हालांकि भारत को एक उभरती हुई शक्ति माना जाता है, फिर भी उसे अंतरराष्ट्रीय मंचों पर अधिक निर्णायक भूमिका निभाने के लिए और अपनी रणनीतिक प्राथमिकताओं को स्पमट करने के लिए कई संघर्षों का सामना करना पड़ता है। भारत को अपनी नीतियों में सुधार करने की आवश्यकता हो सकती है ताकि वह वैश्विक नेतृत्व की ओर मजबूती से बढ़ सके।

इन समस्याओं के बावजूद, भारत की विदेश नीति और सुरक्षा नीति में सुधार की क्षमता है, और यह देश के सामरिक और वैश्विक लक्ष्यों की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठा सकती है। इस शोध का उद्देश्य इन समस्याओं के समाधान के लिए संभावित रणनीतियों और उपायों का विश्लेषण करना है, ताकि भारत अपनी नीतियों को और प्रभावी बना सके।

सुझाव

भारत की विदेश नीति और सुरक्षा नीति को और अधिक प्रभावी बनाने के लिए कुछ प्रमुख सुझाव निम्नलिखित हैं, जो देश को अपनी वैश्विक भूमिका में सुधार और क्षेत्रीय और वैश्विक स्थिरता सुनिश्चित करने में मदद कर सकते हैं:

- **वैश्विक शक्ति संतुलन में रणनीतिक संतुलन बनाए रखनाः** भारत को चीन और अमेरिका जैसे बड़े देशों के बीच संतुलन बनाए रखने के लिए अपने रणनीतिक गठबंधनों और साझेदारियों को अधिक सक्षम और सक्रिय बनाना होगा। इसके लिए भारत को बृहत बहुपक्षीय मंचों, जैसे BRIeS, Quad और संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद् में अपनी भूमिका को और मजबूती से प्रस्तुत करना चाहिए साथ ही, चीन और पाकिस्तान के साथ अपनी सीमा समस्याओं को कूटनीतिक माध्यमों से हल करने की कोशिश जारी रखनी चाहिए, ताकि सैन्य तनाव को कम किया जा सके।
- **आंतरिक सुरक्षा पर अधिक ध्यान केंद्रित करनाः** भारत की सुरक्षा नीति में आतंकवाद, साइबर हमले, और नक्सलवाद जैसी आंतरिक सुरक्षा समस्याओं से निपटने के लिए और अधिक संसाधन और समन्वय की आवश्यकता है। यह जरूरी है कि भारत अपनी काउंटर–टेररिज़्म रणनीतियों को मजबूत करे और राज्यों के बीच समन्वय बढ़ाए साथ ही, साइबर सुरक्षा के क्षेत्र में अपनी क्षमता को और विकसित किया जाए, ताकि डिजिटल दुनिया में उत्पन्न होने वाली नई खतरों से प्रभावी तरीके से निपटा जा सके।
- **आर्थिक और पर्यावरणीय पहलुओं पर जोर देनाः** भारत को अपनी विदेश नीति में आर्थिक और पर्यावरणीय पहलुओं को प्राथमिकता देना चाहिए। जलवायु परिवर्तन और ऊर्जा सुरक्षा के मुद्दे पर भारत को वैश्विक मंचों पर अधिक सक्रिय रूप से भाग लेना चाहिए साथ ही, व्यापार और निवेश के क्षेत्रों में अपने आर्थिक संबंधों को मजबूत करने के लिए भारत को नए और अभिनव रणनीतियाँ अपनानी चाहिए। देशों के बीच मजबूत व्यापारिक साझेदारियाँ स्थापित करने से भारत की आर्थिक स्थिति और सुरक्षा नीति दोनों सशक्त होंगी।
- **सैन्य और तकनीकी साझेदारी को बढ़ानाः** भारत को अपने सैन्य और तकनीकी सहयोग को बढ़ावा देने के लिए वैश्विक और द्विपक्षीय साझेदारियाँ विकसित करनी चाहिए। विशेष रूप से, भारत को रूस, अमेरिका, फ्रांस, और जापान जैसी ताकतवर देशों के साथ अपने सैन्य संबंधों को और सुदृढ़ करना चाहिए साथ ही, रक्षा क्षेत्र में तकनीकी नवाचार और डिजिटल सुरक्षा पहलुओं को मजबूत किया जाए, ताकि भारत की रक्षा क्षमता और समग्र सुरक्षा नीति में सुधार हो सके।
- **विदेश नीति में पारदर्शिता और समन्वय को बढ़ावा देनाः** विदेश नीति को लागू करते समय पारदर्शिता, समन्वय और प्रशासनिक क्षमता को सुधारने की आवश्यकता है। सरकार को विदेश नीति के निर्णयों को अधिक पारदर्शी बनाना चाहिए, ताकि नागरिकों, संगठनों, और अन्य राज्य संस्थाओं को विदेश नीति के उद्देश्यों और नीतियों के बारे में बेहतर समझ हो। यह समन्वय बेहतर प्रशासन और कार्यान्वयन को सुनिश्चित करेगा।

इन सुझावों को लागू करने से भारत अपनी विदेश नीति और सुरक्षा नीति को प्रभावी बना सकता है और वैश्विक मंच पर अपनी स्थिति को और सुदृढ़ कर सकता है।

निष्कर्ष

भारत की विदेश नीति और सुरक्षा नीति, अपने ऐतिहासिक संदर्भ और राष्ट्रीय हितों के अनुरूप, समय के साथ निरंतर विकसित हुई हैं। यह नीतियाँ न केवल भारत के आंतरिक सुरक्षा और वैश्विक राजनीतिक उद्देश्यों को पूरा करती हैं, बल्कि वैश्विक शक्ति संतुलन में भारत की महत्वपूर्ण भूमिका को भी दर्शाती हैं। 21वीं सदी में, जब वैश्विक घटनाएँ तेज़ी से बदल रही हैं, भारत की विदेश नीति और सुरक्षा नीति को समायोजित और अनुकूलित करने की

आवश्यकता है। भारत की विदेश नीति में गुटनिरपेक्षता, बहुपक्षीयता, और क्षेत्रीय सहयोग की मजबूत नींव रखी गई है, लेकिन बदलते वैश्विक परिप्रेक्ष्य में इसे और अधिक गतिशील और प्रभावी बनाने की आवश्यकता है। भारत को अपनी कूटनीतिक रणनीतियों को आर्थिक, सुरक्षा और पर्यावरणीय पहलुओं से जोड़ते हुए क्षेत्रीय और वैश्विक दोनों स्तरों पर स्थिरता और शांति बनाए रखने की दिशा में पहल करनी चाहिए साथ ही, भारत की सुरक्षा नीति में पारंपरिक सैन्य खतरों के साथ–साथ असंवैधानिक खतरों, जैसे आतंकवाद, साइबर हमले, और जलवायु परिवर्तन, का भी ध्यान रखना आवश्यक है। भारत को अपनी आंतरिक सुरक्षा में और अधिक सुधार करने, सैन्य क्षमताओं को सुदृढ़ करने और वैश्विक स्तर पर अपनी रणनीतिक साझेदारियाँ बढ़ाने की दिशा में निरंतर प्रयास करना चाहिए। यह शोध यह स्पष्ट करता है कि भारत के सामने कई चुनौतियाँ हैं, जैसे सीमा विवाद, आंतरिक सुरक्षा मुद्दे, वैश्विक शनि संतुलन में बदलाव और अंतरराष्ट्रीय सहयोग की आवश्यकता। इन समस्याओं का समाधान केवल कूटनीतिक, सैन्य और आर्थिक प्रयासों के सम्मिलित प्रयास से संभव है। समग्र रूप से, भारत की विदेश नीति और सुरक्षा नीति में सुधार और नवाचार की आवश्यकता है, ताकि वह भविष्य में आने वाली वैश्विक चुनौतियों का सामना कर सके। यदि सही दिशा में कदम उठाए जाएं, तो भारत अपने राष्ट्रीय हितों की रक्षा करते हुए वैश्विक मंच पर एक मजबूत और निर्णायक भूमिका निभाने में सक्षम होगा। यह शोध यह संकेत देता है कि भारत को अपनी नीति में एक संतुलित, बहुपक्षीय और व्यावहारिक दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता है, जो उसे न केवल क्षेत्रीय बल्कि वैश्विक परिप्रेक्ष्य में भी एक प्रमुख शक्ति के रूप में स्थापित कर सके।

संदर्भ सूची

1. धनानी, रुण (2021) *भारत की विदेश नीतिः वर्तमान परिप्रेक्ष्य और चुनौतियाँ,* दिल्ली विश्वविद्यालय प्रेस, दिल्ली।
2. कुमार, प्रदीप (2022) जलवायु परिवर्तन और भारत की सुरक्षा नीतिः एक समग्र दृष्टिकोण. *इंडियन जर्नल ऑफ इंटरनेशनल अफेयर्स,* खंड 41, अंक 3, पृ. 223।
3. महाजन, राजीव (2019) *भारत की विदेश नीतिः सिद्धांत, रणनीतियाँ और उद्देश्य,* हार्पर कॉलिन्स इंडिया, नई दिल्ली।
4. रहमान, अमदुल (2018) सामरिक गठबंधन और भारतः वैश्विक परिप्रेक्ष्य, *भारतीय सुरक्षा अध्ययन जर्नल,* खंड 35, अंक 2, पृ. 115–134।
5. सिंह, नरेन्द्र (2023) भारत की आंतरिक सुरक्षा और आतंकवादः एक समकालीन दृष्टिकोण. *वॉयस ऑफ इंडिया जर्नल,* खंड 40, अंक 2, पृ. 150–172।
6. सिंह, सुरेश (2020) *भारत और वैश्विक सुरक्षा नीति.* ओक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली।
7. यादव, रमेश (2021) *भारत की सुरक्षा नीति और वैश्विक शक्तियाँः एक ऐतिहासिक विश्लेषण,* वेस्टलैंड पब्लिकेशन, नई दिल्ली।

****